Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-15, Issue-4, March-2022
www.researchguru.net

जयशंकर प्रसाद के नाटकों मे राष्ट्रीयता

(चन्द्रगुप्त एवं ध्रुवस्वामिनी के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ. जशवंतभाई डी. पंड्या
मार्गदर्शक
सीनियर प्रोफेसर एवं पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग, गूजरात विद्यापीठ, डीन भाषा संकाय, महादेव देसाई समाजसेवा संकुल, गूजरात विद्यापीठ अहमदाबाद- 380014

जसाभाई हीराभाई रंगपरा
पीएच.डी., शोधार्थी हिंदी विभाग, गूजरात विद्यापीठ अहमदाबाद
ईमेल:jrangpara2@gmail.com मो. नं. : 8780565157

❖ **प्रसादजी का परिचय :-**

छायावाद के प्रमुख कवि नाट्यकार और कहानीकार प्रसाद का जन्म काशी (वाराणसी) के सुप्रसिध्ध 'सुधनीसाहु' घराने में हुआ था | १२ वर्ष की उम्र में पिता के असामयिक निधन से पारिवारिक कारणों से वे मिडिल के आगे की पढाई न कर सके | इसी कमी को उन्होंने संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी की पढाई घर पर करके स्वाध्याय से पुरा किया | ब्रजभाषा में 'कलाघर' उपनाम से उन्होंने रचना आरंभ की, फिर खडीबोली की और मुड़े | प्रसाद का कुल साहित्य ६ स्फुट कविता संग्रह, एक मुफ्तक 'आँसू' एक महाकाव्य 'कामायनी' - कुल आठ कविता की पुस्तके और ये तीस ग्रंथ है | छोटी-बड़ी किताबों का और सौ पृष्ठ प्रति पुस्तक माने तो ढाई-तीन हजार पृष्ठों की यह सामग्री है | इससे भी अधिक लिखने वाले हिंदी के कई कवि और उपन्यासकार हुए है | पर प्रसाद साहित्य की श्रेष्ठता उसकी पृष्ठ संख्या मे नहीं, परंतु उसके ऊँचे गुणों मे हैं | उन्होंने जो लिखा उनका महत्त्व हमारे समाज के लिए बहुत है | लेखन करते-करते और परिवार की सामाजिक जिम्मेदारियाँ का बोझ उठाते-उठाते मात्र ४८ साल की आयु मे जीवन की कई तरह की यातनाओं की,पीडाओं को सही करते-करते सन १९३७ ई में उनका निधन हो गया |

❖ **राष्ट्रीयता का स्वरूप एवं परिभाषा :-**

राष्ट्रीयता का स्वरूप सदैव परिवर्तन होता रहता है | अत: इस काल के साहित्य को राष्ट्रीय गौरव से रिक्त नहीं कहा जा सकता | देश के विभिन्न भागों में स्वतंत्रता की जो लहर फ़ैल रही थी उनसे देश के अधिकांश भाग को प्रभावित कर दिया था | राष्ट्रीयता की कसोटी पर यदि इस काल की वीर रचनाओं को परखा जाए तो विदित होगा की राष्ट्रीय भावनाओं की उद्दबुध्द करने में इनका विशेष महत्त्व है | राष्ट्रीयता

वास्तव में एक व्यापक भाव है जिसमें उनके अनुभूतियों समन्वित रूप से अभिव्यक्ति पाती है | देशप्रेम देश की दुर्दशा विदेशियों के प्रति धृणा, देश पर आपत्ति की आशंका आदि |

राष्ट्रीयता को शब्दों की संकुचित सीमा मे बाँध पाना कुछ कठिन है, राष्ट्रीयता एक ऐसी भावना है जिसका सम्बंध मानव की अंत: चेतना से है, जो अनिर्वचनीय होने के कारण केवल अनुभूति का विषय है | राष्ट्र से रागात्मक सम्बंध तथा उसकी समृध्धि, कल्याण और मंगल कामना ही राष्ट्रीयता की भावना है |

- **परिभाषाए**

विश्व प्रसिध्ध विचारक मैकाइवर के अनुसार "राष्ट्रीयता कुछ मनुष्यों की साथ रहने की भावना है |

- **ब्राइस के अनुसार**

"राष्ट्र एक राष्ट्रीयता है, जिसने अपना संगठन एक राजनीतिक संस्था के रूप मे कर लिया है और जो स्वतंत्र हो या स्वतंत्रता की इच्छा रखता है |"

- **दार्शनिक जे.एस मिल का मानना है की**

- "मानव जाति के एक भाग को राष्ट्रीयता कहा जाता है, यदि वह सामान्य सहानुभूति द्वारा बंधा हो |"

- **प्रसादजी के नाटकों में राष्ट्रीयता :-**

प्रसाद के लेखन का काल क्रम ई सन् १९०७ से १९३७ ई. सन् तक का है और उसी समय हमारे देश मे आजादी के बिगुल बज रहे थे और हमारा देश अब अंग्रेजो से गुलाम न रहकर आजाद होना चाहता था | सभी समकालीन साहित्यकार की तरह प्रसादजी ने भी अपने साहित्य मे राष्ट्रप्रेम की भावना को उजागर किया है उनकी कालावधि ई सन् १८८९ स.ई. सन् १९३७ तक की थी| उन समय में प्रसादजी ने कई यातना, पीड़ा दु:ख दर्द को स्वयं महसूस कर चुके हैं और उन्ही कारण उनके साहित्यको ऐतिहासिकता का आधार बनाकर राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभावना और राष्ट्रीयता उनके समग्र साहित्य मे दिखाई देती है | यहाँ पर कुछ राष्ट्रीयता की बाते आपको बताना चाहता हु |

उनके चित्राधार काव्य संग्रह से यह कविता ली गई है | उनकी कुछ पंक्तियाँ मैं आपके सामने प्रस्तुत करता हूँ |

"अहा ! खेलता कौन यहाँ शिशु सिंह से
आर्य वृन्द के सुंदर सुखमय भाग्य-सा!
वही वीर यह बालक है दुष्यंत का
भारत का शिररत्न 'भरत' शुभ नाम है।"

उपरोक्त पंक्ति में कवि ने दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र भरत की निर्भिकता का सजीव वर्णन किया है | शेर के मुह मे से दांत गिनानेवाला यह बालक आगे चलकर भरत के नाम से जाना गया

इसी के नाम से भारत देश का नामकरण हुआ |

- चन्द्रगुप्त नाटक में राष्ट्रीयता कूट-कूटकर भरी है | नाटक की मुख्य नारी पात्र अलका राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है | उसके गायन में हमेशा एक संदेश है - जागरण का, देश प्रेम का | उसका उदबोधनगीत नवजीवन का संचार करने वाला है।

  "हिमाद्रि तृग श्रुग र्स,
  प्रबुध्द शुद्ध भारती |
  स्वयं प्रभा समुज्जवला,
  स्वतंत्रता पुकारती,
  अमत्य वीर पुत्र हे, दृढ - प्रतिज्ञा सोच लो
  प्रशस्त पूण्य पंथ है, बढे चलो, बढे चलो।"

- देश प्रेमी आम्भीक की बहन अलका अपने राष्ट्र को हदय से अधिक प्रेम करती है| वह युनानी सेनापति सिल्युक्स को वीरतापूर्वक उत्तर देती है - मेरे देश है, मेरे पहाड़ है, मेरी नदियाँ हैं और मेरे जंगल है | इस भूमि के एक-एक परमाणु मेरे है और मेरे शरीर के एक-एक शुद्र अंश परमाणुओं से बने हैं |

- जब ग्रीस देश की राजकुमारी कार्नेलिया भारत के वैभव और ज्ञान से आश्चर्यान्वित एव पुलकित होकर उसकी प्रशंसा करती है और वंदना के रूप में गाने लगती है,

  "अरुण यह अधुमय देश हमारा |
  जहा पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा |
  इस देश मे पराये भी अपनेपन का अनुभव करते है|"

- नाटक का एक और वीर सेनानी है पर्वतेश्वर उसका भी देश-प्रेम और शूरता का सचोट दृष्ट्रव्य निम्नांकित वाक्यों में हम देख सकते हैं जैसे कि - "इन्हें बतला देना होगा की भारतीय लड़ाना जानते हैं, बादलो से पानी बरसाने की जगह ब्रज बरसाते हैं, सारी गज सेना छिन्न-भिन्न हो जाए | रथ विरथ हो, रक्त के नाते धमनियों से बहे | परंतु एक पग भी पीछे हटना पर्वतेश्वर के लिए असंभव है|"

- चाणक्य ने तो नन्द की सभा में यह शपथ ली थी की "यह शिखा नन्द्कुल की कालसपिर्नी है | वह तब तक बन्धन में होगी, जब तक नन्दफुल निशेष न होगा |

- गुप्तवंश के प्रतापी सम्राट समुद्रगुप्त के दो पुत्र थे रामगुप्त और चन्द्रगुप्त | समुद्रगुप्त ने चन्द्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी (वारिस) बनाया था, परंतु पिता की मृत्यु के बाद बड़ा भाई होने के नाते रामगुप्त ने राजसिंहासन पर अधिकार कर लिया| ध्रुवस्वामिनी का विवाह चन्द्रगुप्त से तय हुआ था, पर रामगुप्त ने छल-कपट से उर्स अपनी पत्नी बना लिया | रामगुप्त कपटी,

कायर और विलासी था | उसकी दुर्बलताओं का लाभ उठाने के लिए शकराज ने उसे युध्ध में पराजित करने का निश्चय किया | उसकी सेना ने रामगुप्त के शिविर को घरे लिया | रामगुप्त भयभीत हो गया | शक्रराज ने अपने संधि-प्रस्ताव मे ध्रुवस्वामिनी को माँगा | अपने स्वार्थी और चापलूस मंत्री शिखर स्वामी की सलाह मानकर रामगुप्त ने शकराज की मांग स्वीकार कर ली | अपने पति की इस कायरता से ध्रुवस्वामिनी की गहरी ठेस उसे पहुंची | तब चन्द्रगुप्त अपने कुल के सम्मान की रक्षा करने की लिए तैयार होता है | वह ध्रुवस्वामिनी के देश में शकराज के पास जाता है और उसका वध कर देता है | इसी दरम्यान रामगुप्त भी मारा जाता है और चन्द्रगुप्त राजसिंहासन पर बैठता है|

इस तरह नैतिक दृढ़ता, शोर्य, स्वदेश भक्ति, स्वाभिमान, स्वातंत्र्य प्रेम एव राष्ट्रीयता की अदात भावनाये इनमें मुखरित हुई है|

❖ **संदर्भ सूचि**

१. सम्पूर्ण नाटक एव एकांकी - डॉ. सुरेश गौतम, डॉ.विणा गौतम, प्रथम संस्करण - २०१५
२. जयशंकर प्रसाद - डॉ. प्रभाकर माचवें, संस्करण- १९९०
३. राष्ट्रीय नवजागरण और प्रसाद के नाटक - डॉ. इन्दुमती सिंह, प्रथम संस्करण - २००१
४. हिन्दी द्‌वितीय भाषा कक्षा ८ से १२ तक की कीताबे - गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर